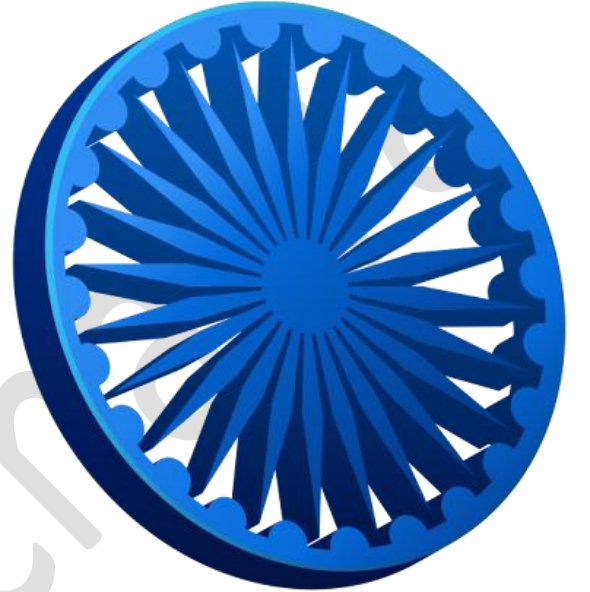


धम्मचक्र (DHAMMACHAKRA)

❖ धम्मचक्र का अर्थ –

पाली मे "धम्म चक्र" का शाब्दिक अर्थ है धम्म का पहिया। धम्मचक्र का सम्बन्ध तथागत बुद्ध और सम्राट अशोक से है। धम्म चक्र दो शब्दों से मिलकर बना है धम्म और चक्र, धम्म का अर्थ होता है बुद्धा द्वारा बताया गया मार्ग व चक्र का अर्थ होता है गतिशील होना, अर्थात् बुद्धा द्वारा बताया गया मार्ग हमेशा गतिशील रहना ही "धम्म चक्र" है इसको सम्राट अशोक ने अपने शिलालेखों में 24 डंडियों वाला बनाया है क्योंकि एक दिन मे 24 घंटे होते है। जिसको सम्राट अशोक ने अपने शिलाओं में धम्म का पहिया 24 घंटे गतिशील रहना ही धम्मचक्र है अर्थात् धम्म का कारवा 24 घंटे चलता रहे कभी रुके नही। धम्म क पहिय में 24 तीलियों धम्म की 24 अलग-अलग शिक्षाओ को बताती है।



तथागत गौतम बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त करने के लिए अष्टांगिक मार्ग बताया है। लेकिन उन्होंने अष्टांगिक मार्ग को प्रदर्शित करने के लिए 08 डंडियों वाला कोई चक्र नही बनाया बल्कि यह कहा की जो कोई अष्टांगिक मार्ग का पालन हमेशा यानी 24 घंटे करेगा तो वह हमेशा 24 घंटे जागरूक और निर्वाण के सुख को प्राप्त करेगा। इसी आधार पर महान सम्राट अशोक ने 24 डंडियों का धम्म चक्र बनाया था। लेकिन कुछ वर्तमान के विद्वानो ने अष्टांगिक मार्ग को प्रदर्शित करने के लिए आठ तीलियों वाला चक्र बनाया। जिसे धम्म चक्र कहते है, और महान सम्राट अशोक के द्वारा बनाया गये धम्म चक्र को अशोक चक्र कहते हैं।

➤ धम्मचक्र की शुरुआत –

आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व बुद्ध समय में शाक्यों और कोलियों के बीच रोहिणी नदी के जल के बटवारों को लेकर दोनों पक्षों के मध्य विवाद खड़ा हो गया, विवाद इतना बढ़ गया कि युद्ध स्तर तक की नौबत आ गई। किन्तु बुद्ध युद्ध को टालने के लिये अड़े रहे, इसी हट के कारण राज्य के मंत्रीमण्डल ने उनको देश निकाला की सजा दी जिसको बुद्ध ने स्वीकार करते हुए सम्पूर्ण परिवार से व पूरे राज्य के निवासीयों से अज्ञा लेकर बौद्ध गया की ओर निकल पड़े। इस यात्रा के दौरान उन्होंने देखा की संसार में दुःख है इसी दुःख का निवारण हेतु उन्होंने पीपल वृक्ष (बौद्धिवृक्ष) के नीचे 06 वर्ष तप करने के पश्चात, ज्ञान प्राप्त करने पर वह सिद्धार्थ गौतम से बुद्ध कहलाये। ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात वह बहुत समय तक भटकते रहे, फिर उन्हें अपने तप करने के समय पाँच लोगों को खोजा जो उन्हें छोड़कर चले आये थे। वह पाँच लोग उन्हें सारनाथ में मिले। सावन माह की पूर्णिमा के दिन गौतम बुद्ध ने उन्हें चार आर्य सत्य, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और 10 पारमिताओं का सम्पूर्ण ज्ञान दिया इसी दिन को बौद्ध धम्म में धम्मचक्क परिवर्तन दिवस (गुरु पूर्णिमा) के नाम से जाना जाता है।

अधिक जानकारी के लिये (बुद्ध और उनका धम्म – डॉ० भीमराव अम्बेडकर)

❖ बौद्ध धम्म में धम्म चक्र का महत्व –

बौद्ध धम्म में धम्म चक्र का विशेष महत्व है यदि बौद्ध धम्म में से धम्म चक्र को हटा दिया जाये तो बौद्ध धम्म को समझने और उसकी शिक्षाओं को अपनाने में तथा बुद्धिष्म को प्रदर्शित करने अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि बौद्ध धम्म की शुरुवात ही धम्म चक्क प्रवर्तन से होती है। तथागत गौतम बुद्ध ने सारनाथ में जो प्रथम धम्मोपदेश दिया था उसे प्रथम धम्म चक्र प्रवर्तन भी कहा जाता है। 528 ईसा पूर्व में तथागत गौतम बुद्ध ने सारनाथ के इसीपतनम मगदावन में ठहरे हुवे पांच परिव्राजाको को सभी दुखों से मुक्त होकर निर्वाण प्राप्त करने का मार्ग बताया था। इसी को धम्म चक्र

प्रवर्तन कहते हैं। क्योंकि यही से धम्म चक्र गतिमान हुआ था तब से आज तक निरंतर पूरे संसार में धम्म चक्र गतिमान है। बीच में भारत देश में थोड़ा स्थिर हो गया था लेकिन बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को धम्म चक्र को फिर से गति दी। तब से यह भारत देश में भी तेज गति से गतिमान हो गया है। जो कोई भी मानव तथागत गौतम बुद्ध द्वारा दिया गया प्रथम धम्मोपदेश को पढ़ेगा और अपने जीवन में उन उपदेशों का पालन करेगा यानी अनुसरण करेगा, वह दुनिया के सभी दुःखों से मुक्त होकर निर्वाण को प्राप्त करेगा। अन्यथा वह कभी भी अपने जीवन में सभी दुःखों से मुक्त नहीं हो सकता। यही बौद्ध धम्म में धम्म चक्र का महत्व है।

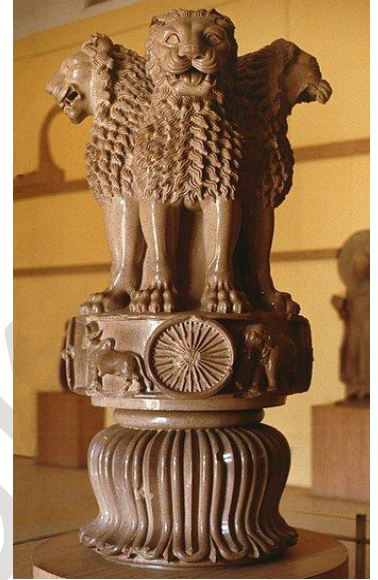
❖ धम्मचक्र की शिक्षाओं को दैनिक जीवन में कैसे शामिल किया जा सकता है ?

धम्म चक्र की शिक्षाओं को दैनिक जीवन में अभ्यास के माध्यम से शामिल किया जा सकता है। मानव यदि पंचशील का, अष्टांगिक मार्ग का एवं दस पारमिताओं का निरंतर रोज-रोज थोड़ा थोड़ा पालन करेगा तो एक दिन वह इतना अभ्यासी हो जायेगा कि वह बिना अभ्यास के ही स्वतः धम्म चक्र की शिक्षाओं का पालन करने लगेगा। जैसे एक छोटा बच्चा रोज-रोज निरंतर थोड़ा-थोड़ा खड़े होकर अपने पैरों से चलने का अभ्यास करता है तो वह कई बार गिरता है, उठता है। कभी कभी उसे चोट भी आ जाती है लेकिन फिर भी वह निरंतर अभ्यास करता रहता है और आखिरकार वह दिन आ ही जाता है जब वह बिना अभ्यास के चलने और दौड़ने लग जाता है।

❖ क्या धम्म चक्र के बारे में कोई प्रसिद्ध ऐतिहासिक संदर्भ है ?

1. सारनाथ का अशोक स्तम्भ जिस पर चार शेरों के साथ ही साथ धम्म चक्र भी बना हुआ है।
2. महान सम्राट अशोक के शिला लेखों पर भी धम्म चक्र बना हुआ है।
3. त्रीपिटक साहित्य में भी धम्म चक्र के बारे में बताया गया है।

4. दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धम्म ग्रंथ "बुद्ध और उनका धम्म" में भी धम्म चक्र का जिक्र मिलता है।
5. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा महान सम्राट असोक द्वारा निर्मित असोका स्तम्भ, चारो दिशाओं की ओर मुँह वाले सिंह, व चक्र, अलग-अलग व एक साथ पाये गये अवशेषों को संग्रालय में देखा जा सकता है।
6. इतिहासकारों ने अपनी बहुत सारी पुस्तकों में सम्राट असोक द्वारा निर्मित असोका स्तम्भ, चारो दिशाओं की ओर मुँह वाले सिंह, व चक्र आदि का जिक्र व उल्लेख मिलता है।
7. महान सम्राट असोक द्वारा निर्मित 84 हजार बौद्ध स्तूपों का निर्माण वाले स्थानों में ज्यादातर स्थानों में धम्म चक्र का उल्लेख या मूर्ति शिला देखने को मिलती है
8. सम्पूर्ण भारत और पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल आदि देशों में भी सम्राट असोक द्वारा निर्मित असोका स्तम्भ, चारो दिशाओं की ओर मुँह वाले सिंह, व चक्र मिलते हैं।



❖ धम्म चक्र के मूल सिद्धांत क्या हैं ?

पंचशील, अष्टांगिक मार्ग, दस पारमिताये, और प्रज्ञा पारमिता जो सब पर लागू होती है। धम्म चक्र के यह चौबीस मूल सिद्धांत हैं।

पंचशील —

- 1— हिंसा नहीं करना (No Violence)।
- 2— चोरी नहीं करना (Don't Steal)।
- 3— व्याभिचार नहीं करना (Do Not Commit Adultery)।
- 4— झूठ नहीं बोलना (Don't Lie)।
- 5— नशा नहीं करना (Not to Drink)।



अष्टांगिक मार्ग –

सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि।

(1) दान, (2) सोल, (3) त्याग, (नेक्खम्म), (4) प्रज्ञा, (5) वीर्य, (6) खन्ति, (क्षान्ति) (7) सत्य, (8) अधिष्ठान, (9) मैत्री (10) उपेक्षा

प्रज्ञा पारमिता यानी निर्मल बुद्धि जो सभी पर लागू होती है।

अशोक चक्र की तीलियों में पांच तीली पंचशील को प्रदर्शित करती है। आठ तीलियाँ अष्टांगिक मार्ग को प्रदर्शित करती हैं। दस तीलियाँ दस पारमिताओं को प्रदर्शित करती हैं और चौबीस वी तीली प्रज्ञा पारमिता को प्रदर्शित करती है।

❖ बौद्ध धम्म में नैतिकता का महत्व –

बुद्धिष्णु में सबसे अधिक महत्वता नैतिकता को दी जाती है क्योंकि **नैतिकता ही धम्म है और धम्म ही नैतिकता है।** इस सम्बन्ध में अधिक व उचित जानकारी के लिये बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा लिखित बुद्धिष्णु धम्म ग्रंथ **“बुद्ध और उनका धम्म”** में मिलती है।

❖ धम्मचक्र (Dhammachakra)

धम्मचक्र का सम्बन्ध बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षा से है जो निरंतर जनमानस के कल्याण के लिए करबद्ध है बुद्धा की शिक्षाओं का मुख्य बिंदु मानव कल्याण है मानव कल्याण के लिए बुद्धा ने सिद्धांत बनाए थे जिन्हें पूरी दुनिया में त्रिशरण, चार आर्य सत्य, पंचशील अष्टांगिक मार्ग और 10 पारमिताओं के नाम से जाना जाता है। और बुद्धिष्णु के अनुसार जिनका पालन करने से मानव जीवन शत प्रतिशत सुखी होता है। अन्य धर्मों के धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि सभी धर्मों में **खुद को ईश्वर व अवतार घोषित किया है जबकि बुद्ध ने खुद को मार्गदाता बताया है, न कि मुक्तिदाता।**

❖ बुद्ध स्टैचू (Buddha Statue)

बुद्ध कि स्टैचू ज्यादातर ध्यान की मुद्रा में होती है बुद्धा की पहली मूर्ति प्रथम शताब्दी में बुद्धिष्ट राजा कनिष्क के द्वारा मथुरा, उत्तर प्रदेश (वर्तमान) में बनवाई गई थी क्योंकि बुद्ध की मूर्ति कल्पना के आधार पर बनाई गई थी और सबने बुद्धा को अपने हिसाब से बनाने का प्रयास किया है इसीलिए वर्तमान में विभिन्न जगहों पर भिन्न भिन्न प्रकार की अनेक मुद्राओ में बुद्ध की मूर्ति मिलती है।

❖ बुद्ध की मुद्राएं (Posture of Buddha)

आशीर्वाद की मुद्रा बुद्ध अन्य 12 अलग अलग मुद्राओ में से एक है बुद्ध की सबसे ज्यादा मूर्तियां ध्यान, ज्ञान, आशीर्वाद और आराम की मुद्रा (लेटे हुए बुद्ध) में मिलती है इसके अलावा उत्तरबोधि, वितर्क, सेपना, धर्मचक्र, कर्ण, अभय, ज्ञान, ध्यान, नमस्कार, वरद्ध, तर्जनी व भूमि स्पर्श ये सब मुद्राएं डॉक्टर अंबेडकर मेमोरियल भवन 26 अलीपुर रोड, नई दिल्ली में देखने को मिल जाती हैं।

पुस्तक संदर्भ (अधिक जानकारी के लिये) –

1. बुद्ध और उनका धम्म – डॉ० भीमराव अम्बेडकर
2. बुद्धचर्या – राहुल सांकृत्यायन

(कपिल बौद्ध LL.B)